

भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के प्रवृत्ति का आकलन

डॉ. शरद कुमार

एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, एन.आर.ई.सी. कॉलेज, खुर्जा (बुलन्दशहर)

Email- sharadkuamr@gmail.com

सारांश

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को निवेशक के देश के अलावा किसी अन्य देश में संचालित किसी फर्म में प्रबंधन नियंत्रण का एक हिस्सा प्राप्त करने के लिए किए गए निवेश के रूप में परिभाषित किया जाता है। भारत में, पर्याप्त मात्रा में मानव संसाधन उपलब्ध हैं, साथ ही पर्याप्त संसाधन भी। यदि पूंजी जुटाई जाए तो भारतीय अर्थव्यवस्था महत्वपूर्ण विकास कर सकती है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पूंजी विस्तार का सबसे सरल और कम खर्चीला तरीका है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के प्रवृत्ति का आकलन करना है। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ने कुछ भारतीय बैंकों के प्रदर्शन को कैसे प्रभावित किया है। इस अध्ययन में उद्देश्यों के अनुसार उचित सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके प्राप्त आंकड़ों का मूल्यांकन किया गया है, और उन्हें व्याख्याओं के साथ क्रमिक रूप से दिया गया है।

परिचय

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश एक व्यक्ति या व्यावसायिक इकाई द्वारा एक देश (गृह देश) में, दूसरे देश (मेजबान देश) में किसी इकाई के उत्पादन और प्रबंधन में किया गया दीर्घकालिक प्रत्यक्ष निवेश है। इस तरह के निवेश का उद्देश्य दीर्घकालिक संबंध स्थापित करना है, अर्थात् एक अर्थव्यवस्था के निवासी उद्यम द्वारा किसी अन्य अर्थव्यवस्था के निवासी व्यवसाय उद्यम के साथ स्थायी प्रबंधन हित (वोटिंग स्टॉक का 10 प्रतिशत या अधिक) स्थापित करना। (ओईसीडी, 2015)

इसे विदेश में पंजीकृत किसी कंपनी की इक्विटी पूंजी में किए गए प्रत्यक्ष योगदान के रूप में चैनलाइज़ किया जाता है और यह घरेलू इक्विटी निवेश के समान है। यह मेजबान देश में वास्तविक संपत्ति बनाता है। दीर्घकालिक अंतर्राष्ट्रीय पूंजी आंदोलन का यह रूप या तो लक्ष्य देश में किसी कंपनी को खरीदकर या उस देश में मौजूदा व्यवसाय के संचालन का विस्तार करके या किसी सहायक कंपनी को शुरू करके या विदेशी देश में संयुक्त उद्यम शुरू करके बनाया जा सकता है। इस प्रकार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश किसी विदेशी देश में किए गए निवेश को संदर्भित करता है जिसमें निवेशक निवेश पर नियंत्रण बनाए रखता है। इसमें आमतौर पर विदेशी उद्यम के प्रचार, उत्पादन, वितरण, प्रबंधन और अन्य गतिविधियों में प्रत्यक्ष भागीदारी शामिल होती है। इसके अलावा, इसमें संयुक्त उद्यम, प्रौद्योगिकी और विशेषज्ञता का हस्तांतरण भी शामिल है। चूंकि एफडीआई प्रवाह प्राथमिक बाजार में आता है, इसलिए इसमें शेयरों की खरीद के माध्यम से शेयर बाजार में किए गए प्रत्यक्ष निवेश को शामिल नहीं किया जाता है।

यहाँ ध्यान देने वाली एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश स्टॉक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के दो अलग-अलग लेकिन संबंधित माप हैं। जहाँ, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह एक निर्दिष्ट अवधि के दौरान नए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को दर्शाता है, जबकि किसी समय पर मौजूद प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की कुल राशि को प्रत्यक्ष विदेशी निवेश स्टॉक कहा जाता है। इस प्रकार, ये स्टॉक एफडीआई के पिछले प्रवाह की कुल राशि है, जबकि एफडीआई प्रवाह में विदेशी प्रत्यक्ष निवेशक द्वारा (या तो सीधे या अन्य संबंधित उद्यमों के माध्यम

से) एफडीआई उद्यम को प्रदान की गई पूंजी और विदेशी प्रत्यक्ष निवेशक द्वारा एफडीआई उद्यम से प्राप्त पूंजी दोनों शामिल हैं। प्रत्यक्ष विदेशी निवेश दीर्घकालिक विचारों द्वारा नियंत्रित होते हैं क्योंकि इसे अल्पावधि में आसानी से समाप्त नहीं किया जा सकता है। इसलिए, प्रत्यक्ष विदेशी निवेशकों का एफडीआई निर्णय कई मैक्रो और माइक्रो कारकों जैसे कि सरकारी नीतियों, औद्योगिक और आर्थिक संभावनाओं, दीर्घकालिक राजनीतिक स्थिरता आदि से प्रभावित होता है।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के दिशा-निर्देशों के अनुसार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के तीन प्रमुख घटक हैं, अर्थात् इक्विटी पूंजी, पुनर्निवेशित आय और अंतर-कंपनी ऋण (जैसा कि भुगतान संतुलन मैनुअल के 5वें संस्करण में परिभाषा में दिया गया है); जिन्हें किसी भी देश के कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्रवाह का अनुमान लगाते समय ध्यान में रखा जाना चाहिए

2000-01 से पहले, भुगतान संतुलन सांख्यिकी में रिपोर्ट किए गए भारत के एफडीआई के आंकड़ों में केवल इक्विटी पूंजी को ही ध्यान में रखा जाता था। इस प्रकार, मई, 2002 में औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग (डीआईपीपी) ने भारत में एफडीआई समंक की रिपोर्टिंग प्रणाली को अंतरराष्ट्रीय सर्वोत्तम प्रथाओं के अनुरूप लाने के लिए एक समिति का गठन किया। एफडीआई की इस नई परिभाषा को ध्यान में रखते हुए भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने वर्ष 2000-01 से कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्रवाह के आंकड़ों को संशोधित किया है। यूएनसीटीएडी द्वारा दी गई परिभाषा के अनुसार,

- इक्विटी पूंजी का अर्थ है, “विदेशी प्रत्यक्ष निवेशक द्वारा अपने देश के अलावा किसी अन्य देश में किसी उद्यम के शेयरों की खरीद।” (जेम्स, 2010) इस प्रकार, इसमें मेजबान देश के उद्यमों में विदेशी प्रत्यक्ष निवेशकों द्वारा शाखाओं, सहायक कंपनियों और सहयोगियों के इक्विटी शेयरों की खरीद और अन्य पूंजी योगदान शामिल हैं।
- पुनर्निवेशित आय में, “प्रत्यक्ष निवेशक का हिस्सा (प्रत्यक्ष इक्विटी भागीदारी के अनुपात में) आय शामिल है जो सहबद्धों द्वारा लाभांश के रूप में वितरित नहीं की जाती है, या प्रत्यक्ष निवेशक को प्रेषित नहीं की गई आय। सहबद्धों द्वारा बनाए गए ऐसे मुनाफे को पुनर्निवेशित किया जाता है।” (जेम्स, 2010)
- इंटर-कंपनी ऋण या इंटर-कंपनी ऋण लेनदेन में, “प्रत्यक्ष निवेशकों (मूल उद्यम) और संबद्ध उद्यमों के बीच अल्पकालिक या दीर्घकालिक उधार और धन उधार देना शामिल है।” (जेम्स, 2010) यह निवेशकों द्वारा सहयोगियों को दिए गए धन को उधार देने को संदर्भित करता है, आमतौर पर पैसे वापस मांगने के इरादे के बिना।

साहित्य समीक्षा

सुजाना बोटिंग (2019) के शोध का उद्देश्य समीक्षा करना और यह सुनिश्चित करना था कि छह चयनित कंपनियों और उद्योग और समग्र रूप से पूंजी बाजार पर प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का सकारात्मक या नकारात्मक प्रभाव है या नहीं। अध्ययन के निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक दोनों डेटा एकत्र किए गए थे। अध्ययन ने घाना में एफडीआई और शेयर बाजार का मार्गदर्शन करने वाले साहित्य का भी विस्तार किया है। “घाना के पूंजी बाजार पर एफडीआई के प्रभाव” पर अध्ययन के परिणामस्वरूप यह पता चला कि एफडीआई वाली कंपनियों ने शेयर बाजार के संचालन को प्रभावित किया। यह एक्सचेंज पर सकारात्मक प्रभाव दिखाता है।

दिव्या (2020) ने अपने अध्ययन में आरबीआई वेबसाइट और बीएसइ वेबसाइट से 1-01-2010 से 31.12.2019 की अवधि के लिए FII, IFT, M3, उत्पादन सूचकांक और डब्ल्यूपीआई जैसे नमूना मैक्रोइकॉनॉमिक संकेतकों का चयन किया था। अध्ययन में वर्णनात्मक सांख्यिकी, सहसंबंध, ग्रेजर कारणता परीक्षण और वीडसीएम जैसे सांख्यिकीय उपकरण नियोजित किए। शोध में पाया कि चयनित मैक्रोइकॉनॉमिक चर आंशिक रूप से सामान्य रूप से वितरित किए गए थे और अध्ययन अवधि के दौरान जोखिम रिटर्न के बजाय उच्च से संबंधित था। वीडसीएम ने खुलासा किया कि एक अध्ययन में बीएसइ सेंसेक्स चर की चाल लंबी अवधि के संतुलन के आउटपुट से पिछली अवधि के अंतर से जुड़ी थी। यह अध्ययन अवधि के दौरान चयनित श्रृंखलाओं के बीच अल्पकालिक संबंध को स्पष्ट करता है और साथ ही चयनित मैक्रोइकॉनॉमिक चर बीएसइ सेंसेक्स रिटर्न को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करते हैं। इस अध्ययन ने सुझाव दिया कि विनिर्माण क्षेत्रों के निवेशक समुदाय को निवेश रणनीति बनाने से पहले इन मैक्रोइकॉनॉमिक चर पर विचार करने की आवश्यकता है और परिणाम नीति निर्माताओं का समर्थन करेंगे।

गायकवाड़ (2021) के अध्ययन का उद्देश्य भारत में एफडीआई के हालिया रुझान का विश्लेषण करना और भारतीय अर्थव्यवस्था पर एफडीआई के प्रभाव का विश्लेषण करना था। इनका शोध पत्र द्वितीयक डेटा पर आधारित है। अध्ययन में वित्तीय वर्ष 2013 से 2018 की अवधि शामिल है। विश्लेषण के लिए इस अध्ययन में प्रतिशत विश्लेषण और सहसंबंध विश्लेषण का उपयोग किया गया है। अध्ययन ने निष्कर्ष निकाला कि भारत एक विकासशील राष्ट्र है, लेकिन इसमें निवेश के जबरदस्त अवसर और विकल्प उपलब्ध हैं। वर्तमान शोध के दौरान यह भी देखा गया कि भारत के प्रत्यक्ष बाहरी निवेश (ओएफडीआई) ने बहुत तेजी से विकास और वृद्धि दिखाई है, खासकर वैश्विक वित्तीय संकट के बाद से। भारतीय अर्थव्यवस्था में कुछ बीमारी विमुद्रीकरण के बाद की अवधि के दौरान हुई थी, लेकिन हमारे विश्लेषण के अनुसार यह मंदी क्षणिक है और हमारे विश्लेषण में वृद्धि में गिरावट देखी गई है।

कुमारा नीलांजना (2021) ने अपने अध्ययन में भारत में एफडीआई के महत्व पर जोर देती है जिसमें इस्तेमाल की जाने वाली कार्यप्रणाली प्रतिगमन विश्लेषण और प्रवृत्ति विश्लेषण और डर्बिन वाटसन परीक्षण है ताकि यह निर्धारित किया जा सके कि कुल एफडीआई प्रवाह पर एफडीआई (इक्विटी प्रवाह) का प्रभाव महत्वपूर्ण है या नहीं। शोधपत्र का निष्कर्ष है कि एफडीआई इक्विटी प्रवाह कुल एफडीआई प्रवाह पर महत्वपूर्ण निर्धारक है। यह एफडीआई के लाभ और हानि प्रदान करता है कि एफडीआई की वृद्धि को बढ़ाने के लिए निवेश के मार्ग कैसे खोले जाएं। भारत सरकार एफडीआई के माध्यम से उन्नयन के लिए क्षेत्रों को उदार बनाती है।

वी.एंड एम, (2022) के शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय आईपीओ में एफआईआई के प्रभाव का विश्लेषण करना था। हालांकि, अन्य अध्ययनों के विपरीत जो बाजार पूंजीकरण को लक्ष्य चर के रूप में और एफआईआई प्रवाह को व्याख्यात्मक चर के रूप में उपयोग करते हैं, शोधकर्ता आईपीओ निवेश के लिस्टिंग लाभ पर एफआईआई के प्रभाव की जांच करता है। यह पत्र कुल सदस्यता के अनुपात के साथ-साथ लिस्टिंग लाभ पर पेश किए गए कुल शेयरों के अनुपात के रूप में विदेशी सदस्यता के प्रभाव पर जोर देता है। इस अध्ययन में पेश किए गए कुल शेयर, आईपीओ के दिन कुल सदस्यता और आईपीओ अवधि के दौरान आईपीओ में विदेशी संस्थागत निवेशकों का निवेश एकत्र किया गया है। प्रत्येक आईपीओ डेटा एनएसई वेबसाइट से एकत्र किया जाता है। निफ्टी इंडेक्स रिटर्न और निफ्टी अस्थिरता की गणना मासिक आधार पर की जाती है। प्रतिगमन मॉडल यह निष्कर्ष निकालता है कि कंपनी द्वारा पेश किए गए कुल शेयरों की तुलना में लिस्टिंग लाभ एफआईआई प्रवाह पर सकारात्मक और सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण रूप से प्रभाव डालते हैं। इस डेटा और निष्कर्षों की अधिक समझ हो सकती है जिसके लिए अधिक शोध

की आवश्यकता होती है। हालांकि, शोध से यह निष्कर्ष निकला है कि जब कुल अभिदान पर एफडीआई प्रवाह अधिक होता है तो निवेशक को बेहतर लिस्टिंग लाभ मिल सकता है।

कुमार देवेश, (2022) ने भारत में एफडीआई के परिदृश्य की व्याख्या करते हुए, कहा कि एफडीआई विकसित और विकासशील देशों के लिए आर्थिक विकास की जीवनरेखा है। यहाँ पिछले दो दशकों के दौरान एफडीआई पर जोर दिया गया है क्योंकि एफडीआई प्रवाह जितना अधिक होगा, एफडीआई उतना ही अधिक होगा। भारत एशियाई देशों की तुलना में उच्च एफडीआई गंतव्य पर विचार कर रहा है। लेखक एफडीआई प्रवाह और एफडीआई के प्रभाव को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगाने का प्रयास करता है।

उषा श्रीवास्तव (2023) ने अपने अध्ययन के द्वारा बताया की कुशल कार्यबल, अच्छी विकास संभावनाओं और सुशासन वाली खुली अर्थव्यवस्थाएं बड़ी मात्रा में एफडीआई को आकर्षित करती हैं। भारत में उपरोक्त सभी गुण मौजूद हैं। 1991 में उदारीकरण की शुरुआत और उसके बाद विभिन्न नीति सुधारों के बाद से, एफडीआई ने भारतीय अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा बदलाव लाया है। कम वेतन, अत्यधिक कुशल कार्यबल और उदार एफडीआई नीतियों के कारण विदेशी निवेशकों को भारत में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। देश में स्टार्टअप का माहौल और टेक स्टार्टअप इकोसिस्टम तेजी से बढ़ रहा है।

श्वेता सिंह (2024) ने भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और विदेशी संस्थागत निवेश प्रवाह के रुझान, पैटर्न और ताकत का पता लगाने की कोशिश की। इसके अलावा, भारत में संचयी एफडीआई इक्विटी की संरचना का भी प्रयास किया। उपर्युक्त घटना का विश्लेषण करने के लिए, विभिन्न मानक सांख्यिकीय उपकरणों का उपयोग किया। उन्होंने यह देखा कि इस अवधि में मामूली उतार-चढ़ाव के साथ शुद्ध विदेशी निवेश का प्रवाह हुआ है। दूसरी ओर, इस अवधि में भारत में शुद्ध पोर्टफोलियो निवेश के प्रवाह के रुझान में भारी उतार-चढ़ाव पाया गया है।

टोपियास लीनो (2025) के अनुसार वैश्विक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पिछले वर्ष में गिरावट के बाद 2023 में फिर से बढ़ा। आईएमएफ के नवीनतम समन्वित प्रत्यक्ष निवेश सर्वेक्षण के अनुसार, जो देशों के बीच प्रत्यक्ष निवेश की स्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान करता है, आवक प्रत्यक्ष निवेश \$1.75 ट्रिलियन या 4.4 प्रतिशत बढ़कर रिकॉर्ड \$41 ट्रिलियन पर पहुंच गया। अधिकांश क्षेत्रों में एफडीआई बढ़ा, जिसमें मध्य और दक्षिण एशिया, यूरोप और उत्तरी और मध्य अमेरिका का सबसे अधिक योगदान रहा। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के बीच प्रत्यक्ष निवेश \$880 बिलियन या 3.6 प्रतिशत बढ़ा, जबकि उन्नत अर्थव्यवस्थाओं से उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में \$538 बिलियन या 7.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

भारत में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह

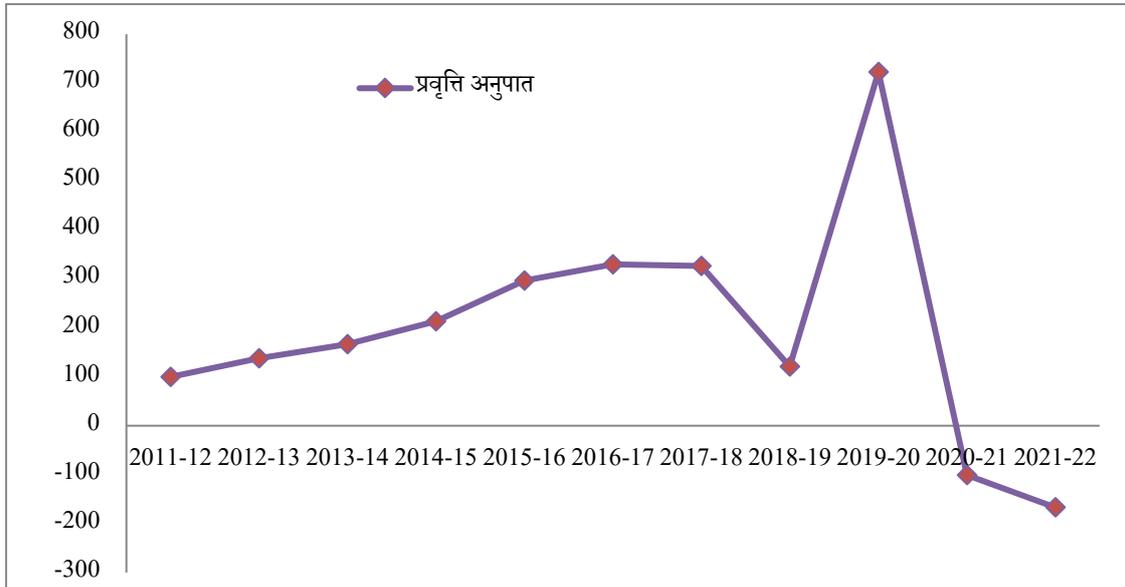
निम्न तालिका 2011-12 से 2021-22 के दौरान भारत में प्रवृत्ति अनुपात, 3 वार्षिक चलती औसत और सीएजीआर कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह प्रस्तुत करती है।

तालिका 1: भारत में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह

वित्तीय वर्ष	प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह की राशि (राशि करोड़ रुपए में)	प्रवृत्ति अनुपात (आधार वर्ष=2011-12)	3 वर्ष चलती औसत	सीएजीआर (CAGR)
2011-12	88517.82	100.00	N/A	86.56

2012-13	121906.74	137.72	N/A	17.35
2013-14	147517.79	166.65	144856.7	18.56
2014-15	189107.09	213.63	152843.9	20.90
2015-16	262321.59	296.34	199648.8	24.27
2016-17	291696.31	329.53	280968.8	21.99
2017-18	288888.51	326.36	247708.3	18.41
2018-19	620000.00	121.05	400194.9	-53%
2019-20	743900.00	722.96	2782630	20%
2020-21	819700.00	-100.66	5418667	10%
2021-22	835700.00	-166.94	7997667	2%
Total	26079583.53			

स्रोत: डीपीआईआईटी 2011-12 से 2021-22 तक



ग्राफ 1: भारत में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का प्रवृत्ति अनुपात

वर्ष 2012-13 में यह 37.72% थी, वर्ष 2013-14 में यह 66.65% थी, वर्ष 2014-15 में यह 113.63% थी, वर्ष 2015-16 में यह 196.34% थी, वर्ष 2016-17 में यह 229.53% थी और वर्ष 2017-18 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में वृद्धि 226.36% थी, वर्ष 2018-19 में यह -53% थी, वर्ष 2019-20 में यह 20% थी, वर्ष 2020-21 में यह 10% थी, वर्ष 2021-22 में यह 2% थी। इस समंक से स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में वृद्धि काफी बढ़ गई थी। हालांकि, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में वृद्धि की प्रवृत्ति का विश्लेषण करने के लिए, तीन वार्षिक चलती औसत की गणना की गई और तदनुसार अध्ययन अवधि के दौरान प्रत्यक्ष विदेशी

निवेश प्रवाह की वृद्धि में बढ़ती प्रवृत्ति देखी गई। वर्ष 2011-12 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का सीएजीआर 86.56% था, वर्ष 2012-13 में यह 17.35% था, वर्ष 2013-14 में यह 18.56% था, वर्ष 2014-15 में यह 20.90% था, वर्ष 2015-16 में यह 24.27% था, वर्ष 2016-17 में यह 21.99% था और वर्ष 2017-18 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का सीएजीआर 18.41% था। उपरोक्त ग्राफ से यह भी पता चलता है कि प्रवृत्ति अनुपात वर्ष 2011-12 में तेजी से बढ़ा, फिर वर्ष 2012-13 में कम हुआ। उसके बाद वर्ष 2013-14 में इसमें कुछ सुधार हुआ और वर्ष 2014-15 में मामूली वृद्धि के साथ यह ऊपर की ओर बढ़ा। फिर लगातार दो वर्षों 2015-16 और 2016-17 में इसमें वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई। हालांकि, इस संबंध में अगले वर्ष 2017-18 में फिर से भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की घटती प्रवृत्ति और पैटर्न का पता चला। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि अध्ययन अवधि के दौरान प्रवृत्ति अनुपात अस्थिर प्रकृति का था। वर्ष 2018-19 में यह -53% था, वर्ष 2019-20 में यह 20% था, वर्ष 2020-21 में यह 10% था, वर्ष 2021-22 में यह 2% था। इस समंक से यह स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में वृद्धि का अनुपात घट रहा था।

भारत में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का प्रवृत्ति मूल्य

निम्न तालिका 2011-12 से 2021-22 के दौरान भारत में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का प्रवृत्ति मूल्य प्रस्तुत करती है।

तालिका 2: भारत में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का प्रवृत्ति मूल्य

वित्तीय वर्ष	प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह की राशि (राशि करोड़ रुपये में)	प्रवृत्ति मूल्य
2011-12	88517.82	NA
2012-13	121906.74	149777.65
2013-14	147517.79	179517.79
2014-15	189107.09	209257.93
2015-16	262321.59	238998.07
2016-17	291696.31	268738.22
2017-18	288888.51	298478.36
2018-19	620000.00	328218.50
2019-20	743900.00	357958.64
2020-21	819700.00	387698.79
2021-22	835700.00	417438.93

स्रोत: डीपीआईआईटी 2011-12 से 2021-22 तक

वर्ष 2011-12 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह 88517.82 करोड़ रुपये, वर्ष 2012-13 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह 121906.74 करोड़ रुपये, वर्ष 2013-14 में 147517.79 करोड़ रुपये, वर्ष 2014-15 में 189107.09 करोड़ रुपये, वर्ष 2015-16 में 262321.59 करोड़ रुपये, वर्ष 2016-17 में 291696.31 करोड़ रुपये तथा वर्ष 2017-18 में 288888.51 करोड़ रुपये रहा। वर्ष 2016-17 तक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई। वर्ष 2012-13 में प्रवृत्ति मूल्य वास्तविक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह से अधिक पाया गया, वर्ष 2013-14 में प्रवृत्ति मूल्य वास्तविक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह से अधिक पाया गया, वर्ष 2014-15 में प्रवृत्ति मूल्य वास्तविक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह से अधिक पाया गया, वर्ष 2015-16 में प्रवृत्ति मूल्य वास्तविक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह से कम पाया गया, वर्ष 2016-17 में प्रवृत्ति मूल्य वास्तविक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह से कम पाया गया तथा वर्ष 2017-18 में प्रवृत्ति मूल्य वास्तविक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह से अधिक पाया गया। वर्ष 2018-19 के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का प्रवृत्ति मूल्य 328218.5014 करोड़ रुपये, वर्ष 2019-20 के लिए 357958.6437 करोड़ रुपये, वर्ष 2020-21 के लिए 358958.6437 करोड़ रुपये है। 387698.7860 करोड़ रुपये, वर्ष 2021-22 के लिए यह 417438.9282 करोड़ रुपये और वर्ष 2022-23 के लिए यह 447179.0705 करोड़ रुपये थी।

भारत में विभिन्न मार्गों से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह (%) के अनुपात का प्रवृत्ति

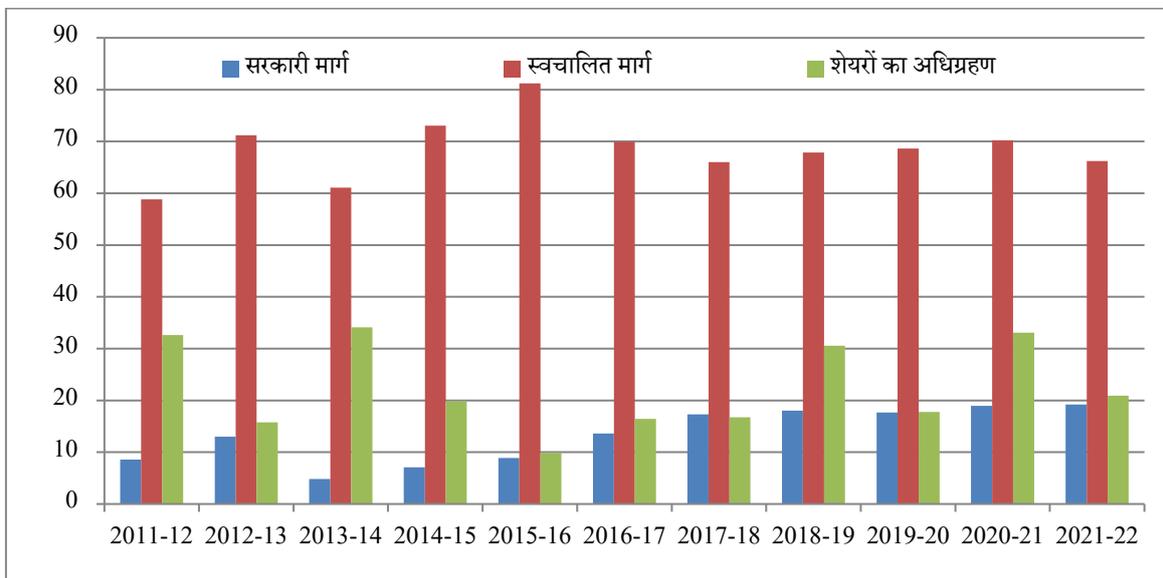
निम्न तालिका 2012-13 से 2021-22 के दौरान भारत में विभिन्न मार्गों के माध्यम से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह (%) के अनुपात की प्रवृत्ति प्रस्तुत करती है-

तालिका 3: भारत में विभिन्न मार्गों से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के अनुपात का प्रवृत्ति (%)

वित्तीय वर्ष	सरकारी मार्ग	स्वचालित मार्ग	शेयरों का अधिग्रहण
2011-12	8.57	58.83	32.60
2012-13	13.00	71.21	15.79
2013-14	4.82	61.10	34.09
2014-15	7.09	73.06	19.85
2015-16	8.91	81.23	9.86
2016-17	13.60	69.98	16.42
2017-18	17.29	65.99	16.72
2018-19	18.03	67.83	30.58
2019-20	17.66	68.64	17.76
2020-21	18.96	70.24	33.10
2021-22	19.23	66.20	20.91

स्रोत: डीपीआईआईटी 2011-12 से 2021-22 तक

वर्ष 2012-13 में, 13% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह सरकारी मार्ग से, 71.21% स्वचालित मार्ग से और 15.79% शेयरों के अधिग्रहण के माध्यम से हुआ था। वर्ष 2013-14 में, 4.82% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह सरकारी मार्ग से, 61.10% स्वचालित मार्ग से और 34.09% शेयरों के अधिग्रहण के माध्यम से हुआ था। वर्ष 2014-15 में, 7.09% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह सरकारी मार्ग से, 73.06% स्वचालित मार्ग से और 19.85% शेयरों के अधिग्रहण के माध्यम से हुआ था। वर्ष 2015-16 में 8.91% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह सरकारी मार्ग से, 81.23% स्वचालित मार्ग से और 9.86% शेयरों के अधिग्रहण के माध्यम से हुआ था। वर्ष 2016-17 में 13.60% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह सरकारी मार्ग से, 69.98% स्वचालित मार्ग से और 16.42% शेयरों के अधिग्रहण के माध्यम से हुआ था। वर्ष 2017-18 में 17.29% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह सरकारी मार्ग से, 65.99% स्वचालित मार्ग से और 16.72% शेयरों के अधिग्रहण के माध्यम से हुआ था। वर्ष 2021-22 में 19.23% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह सरकारी मार्ग से, 66.20% स्वचालित मार्ग से और 20.91% शेयरों के अधिग्रहण के माध्यम से हुआ था।



ग्राफ 2: भारत में विभिन्न मार्गों से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के अनुपात का प्रवृत्ति (%)

सरकारी रूट श्रेणी में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का अनुपात वर्ष 2017-18 में सबसे अधिक पाया गया, उसके बाद वर्ष 2016-17 और वर्ष 2012-13 का स्थान रहा। उपरोक्त ग्राफ से यह महसूस किया जा सकता है कि पिछले वर्ष 2010-11 की तुलना में वर्ष 2011-12 में सरकारी रूट से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में थोड़ी गिरावट आई, वर्ष 2012-13 में सुधार हुआ लेकिन अगले वर्ष 2013-14 में फिर से भारी गिरावट आई। प्रवृत्ति से पता चलता है कि तब तक स्थिति में सुधार होना शुरू हो गया था लेकिन वर्ष 2010-11 के 4 साल पहले के आंकड़े को हासिल करने में दो साल का समय यानी 2015-16 लग गया। फिर अगले दो लगातार वर्षों 2016-17 और 2017-18 के लिए सरकारी रूट से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई।

स्वचालित रूट श्रेणी में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का अनुपात वर्ष 2015-16 में सबसे अधिक पाया गया, उसके बाद वर्ष 2014-15 और वर्ष 2012-13 का स्थान रहा। उपरोक्त ग्राफ से यह महसूस किया जा सकता है कि पिछले वर्ष 2010-11 की तुलना में वर्ष 2011-12 में स्वचालित रूट से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में गिरावट आई, वर्ष

2012-13 में इसमें उल्लेखनीय सुधार हुआ लेकिन अगले वर्ष 2013-14 में इसमें लगभग 10% की भारी गिरावट आई। प्रवृत्ति से पता चलता है कि तब तक स्थिति में सुधार होने लगा था और अगले दो लगातार वर्षों 2014-15 और 2015-16 में स्वचालित रूट से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई। हालाँकि पिछले दो लगातार वर्षों 2016-17 और 2017-18 में इसमें फिर से गिरावट आई और यह वर्ष 2010-11 के अनुपात के लगभग बराबर हो गया।

शेयरों के अधिग्रहण रूट श्रेणी में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का अनुपात वर्ष 2013-14 में सबसे अधिक पाया गया, उसके बाद वर्ष 2011-12 और वर्ष 2010-11 का स्थान रहा। उपरोक्त ग्राफ से यह महसूस किया जा सकता है कि शेयरों के अधिग्रहण रूट में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह पिछले वर्ष 2010-11 की तुलना में वर्ष 2011-12 में बढ़ गया, वर्ष 2012-13 में लगभग आधा हो गया, लेकिन अगले वर्ष 2013-14 में फिर से लगभग 100% बढ़ गया। प्रवृत्ति से पता चलता है कि तब तक स्थिति कम होने लगी और अगले दो लगातार वर्षों 2018-19 और 2019-20 के लिए शेयरों के अधिग्रहण से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में कमी की प्रवृत्ति देखी गई। हालाँकि, पिछले दो लगातार वर्षों 2020-21 और 2021-22 के लिए इसमें फिर से सुधार हुआ है।

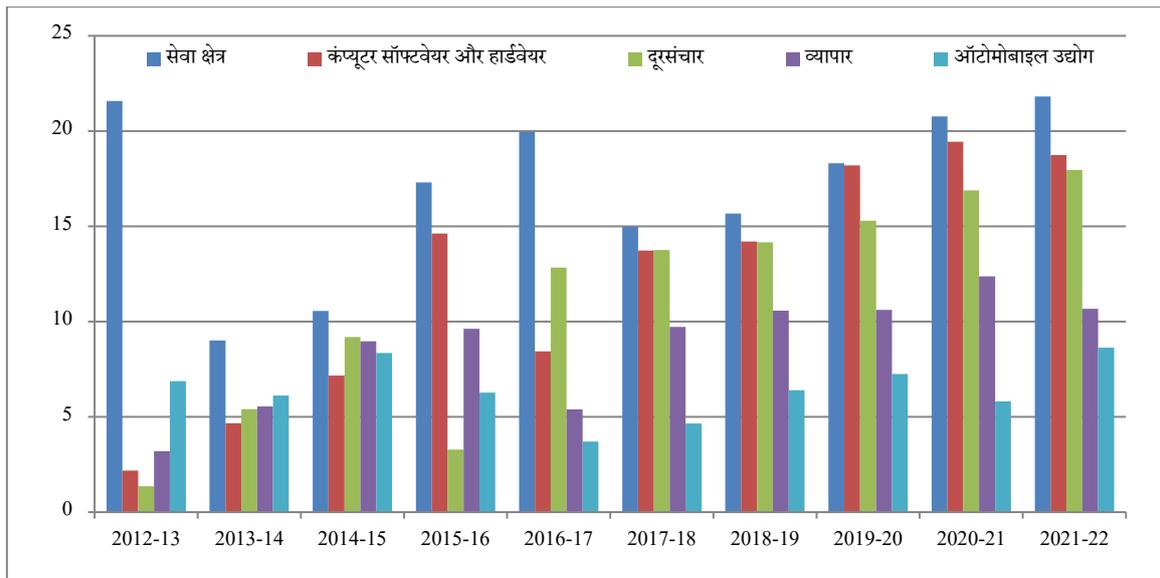
भारत में शीर्ष पांच क्षेत्रों में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के अनुपात का प्रवृत्ति

निम्नलिखित तालिका 2012-13 से 2021-22 की समयावधि के लिए भारत में शीर्ष पांच क्षेत्रों में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के अनुपात की वर्षवार प्रवृत्ति प्रस्तुत करती है।

तालिका 4: भारत के शीर्ष पांच क्षेत्रों में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के अनुपात का प्रवृत्ति

वित्तीय वर्ष (प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह की राशि)	सेवा क्षेत्र	कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर	दूरसंचार	व्यापार	ऑटोमोबाइल उद्योग
2012-13	21.58	2.18	1.36	3.20	6.88
2013-14	9.01	4.67	5.41	5.55	6.12
2014-15	10.56	7.17	9.19	8.97	8.35
2015-16	17.31	14.62	3.29	9.62	6.27
2016-17	19.96	8.44	12.83	5.39	3.71
2017-18	14.97	13.73	13.76	9.72	4.66
2018-19	15.67	14.21	14.16	10.57	6.40
2019-20	18.31	18.20	15.30	10.62	7.25
2020-21	20.77	19.44	16.88	12.38	5.81
2021-22	21.81	18.75	17.96	10.67	8.63

स्रोत: डीपीआईआईटी 2012-13 से 2021-22 तक



ग्राफ 3: भारत के शीर्ष पांच क्षेत्रों में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के अनुपात का प्रवृत्ति

वर्ष 2013-14 में इसमें भारी गिरावट देखी गई थी, जब इसमें 58.24% की गिरावट आई थी। वर्ष 2014-15 में इसमें थोड़ा सुधार हुआ और वर्ष 2015-16 में सेवा क्षेत्र में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का अनुपात 63.92% तक बढ़ गया। वर्ष 2016-17 में 15.30% की वृद्धि देखी गई, लेकिन फिर से 25% की गिरावट आई। वर्ष 2010-11 की तुलना में वर्ष 2017-18 में सेवा क्षेत्र में 14.70% की गिरावट देखी गई।

अगले वर्ष 2012-13 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में थोड़ी कमी आई। वर्ष 2013-14 में इसमें 114.22% की वृद्धि देखी गई। वर्ष 2014-15 में इसमें फिर से 53.53% की वृद्धि हुई और वर्ष 2015-16 में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर क्षेत्र का अनुपात 103.90% बढ़ा। वर्ष 2016-17 में 42.27% की गिरावट देखी गई, लेकिन फिर से इसमें 62.67% की वृद्धि हुई। वर्ष 2010-11 की तुलना में वर्ष 2017-18 में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर क्षेत्र में 240.69% की वृद्धि देखी गई।

वर्ष 2011-12 में दूरसंचार क्षेत्र में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का अनुपात लगभग 35.91% घटा, अगले वर्ष 2012-13 में यह 75% घटा। वर्ष 2013-14 में इसमें सुधार देखा गया जब इसमें 297.79% की वृद्धि हुई। वर्ष 2014-15 में इसमें 69.87% का सुधार हुआ तथा वर्ष 2015-16 में दूरसंचार क्षेत्र में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का अनुपात 64.20% घटा। वर्ष 2016-17 में 289.96% की वृद्धि देखी गई तथा वर्ष 2017-18 में इसमें पुनः 7.24% की वृद्धि हुई। दूरसंचार क्षेत्र में वर्ष 2010-11 की तुलना में वर्ष 2017-18 में 61.50% की वृद्धि देखी गई।

वर्ष 2011-12 में ट्रेडिंग में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का अनुपात लगभग 10.48% कम हुआ, अगले वर्ष 2012-13 में यह 44.14% बढ़ा। वर्ष 2013-14 में इसमें सुधार देखा गया जब इसमें 73.43% की वृद्धि हुई। वर्ष 2014-15 में इसमें 61.62% का सुधार हुआ और वर्ष 2015-16 में ट्रेडिंग में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का अनुपात 7.24% बढ़ा। वर्ष 2016-17 में 43.97% की कमी देखी गई और वर्ष 2017-18 में फिर से 7.24% की वृद्धि हुई। वर्ष 2010-11 की तुलना में वर्ष 2017-18 में ट्रेडिंग में 291.93% की वृद्धि देखी गई।

वर्ष 2011-12 में ऑटोमोबाइल उद्योग में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का अनुपात लगभग 61.26% कम हुआ, अगले वर्ष 2012-13 में इसमें 161.59% की वृद्धि हुई। वर्ष 2013-14 में इसमें थोड़ी सी गिरावट देखी गई,

जब इसमें 11.04% की कमी आई। वर्ष 2014-15 में इसमें 36.43% की वृद्धि हुई और वर्ष 2015-16 में ऑटोमोबाइल उद्योग में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का अनुपात 24.91% कम हो गया। वर्ष 2016-17 में 40.82% की कमी देखी गई और वर्ष 2017-18 में इसमें फिर से 25.60% की वृद्धि हुई। वर्ष 2010-11 की तुलना में वर्ष 2017-18 में ऑटोमोबाइल उद्योग में 31.36% की गिरावट देखी गई।

2020-21 की तुलना में 2021-22 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का अनुपात कम हुआ है। नीचे दी गई तालिका 2012-13 से 2021-22 की अवधि के लिए शीर्ष पांच देशों द्वारा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह की स्थिति प्रस्तुत करती है।

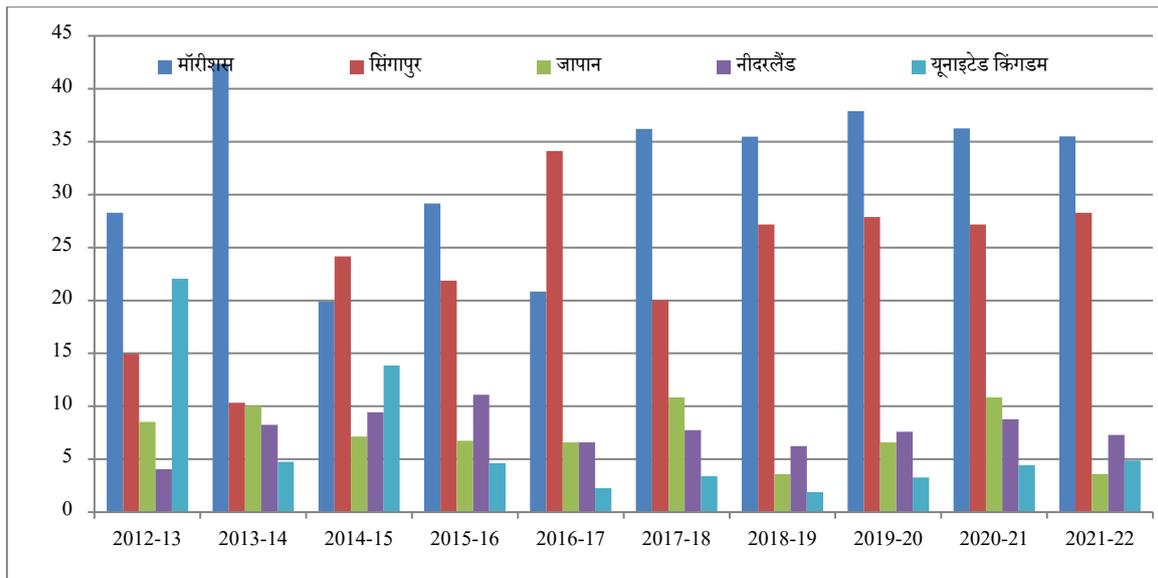
भारत में शीर्ष पांच देशों द्वारा कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के अनुपात का प्रवृत्ति

निम्नलिखित तालिका 2010-11 से 2021-22 के दौरान भारत में शीर्ष पांच देशों द्वारा कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के अनुपात की प्रवृत्ति प्रस्तुत करती है।

तालिका 5: भारत में शीर्ष पांच देशों द्वारा कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के अनुपात का प्रवृत्ति

वित्तीय वर्ष (प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अंतर्वाह की राशि)	मॉरीशस	सिंगापुर	जापान	नीदरलैंड	यूनाइटेड किंगडम
2012-13	28.28	14.96	8.53	4.06	22.06
2013-14	42.37	10.33	10.04	8.25	4.76
2014-15	19.90	24.15	7.15	9.44	13.85
2015-16	29.17	21.87	6.74	11.08	4.64
2016-17	20.85	34.12	6.59	6.59	2.26
2017-18	36.20	20.01	10.83	7.76	3.41
2018-19	35.48	27.19	3.59	6.25	1.89
2019-20	37.88	27.87	6.59	7.60	3.28
2020-21	36.25	27.19	10.83	8.77	4.44
2021-22	35.49	28.29	3.59	7.29	4.87

स्रोत: डीपीआईआईटी 2011-12 से 2021-22 तक



ग्राफ 4: भारत में शीर्ष पांच देशों द्वारा कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के अनुपात का प्रवृत्ति

उपरोक्त आंकड़ों से पता चलता है कि मॉरीशस से कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह का अनुपात वर्ष 2012-13 में घट गया, फिर वर्ष 2013-14 में इसमें लगभग 55% की भारी गिरावट देखी गई, फिर अगले वर्ष इसमें वृद्धि हुई और वर्ष 2017-18 तक लगभग गति पकड़ ली और भारत सबसे अधिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह वाला शीर्ष देश बन गया। दूसरे स्थान पर सिंगापुर ने भी वर्ष 2015-16 तक वृद्धि का प्रवृत्ति दिखाया, हालांकि फिर वर्ष 2016-17 में इसमें गिरावट आई, लेकिन अच्छे के लिए वर्ष 2017-18 में सुधार हुआ। तीसरे स्थान पर जापान ने 2012-13 तक पहले तीन वर्षों के लिए प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई है, लेकिन फिर 2015-16 तक घटती प्रवृत्ति देखी गई। इसने वर्ष 2016-17 में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश अनुपात के उच्चतम आंकड़े दिखाए हैं, लेकिन वर्ष 2017-18 में फिर से गिरावट देखी गई। चौथे स्थान पर नीदरलैंड ने 2014-15 तक भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के अनुपात में वृद्धि की प्रवृत्ति दिखाई है। लेकिन उसके बाद 2017-18 तक घटती प्रवृत्ति देखी गई। भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के मामले में यूनाइटेड किंगडम पांचवां सबसे बड़ा देश है, जिसने वर्ष 2011-12 में एक बड़ा अनुपात दिखाया है जो अध्ययन अवधि के दौरान सबसे अधिक था, लेकिन इस वर्ष को छोड़कर पिछले तीन वर्षों से 2017-18 तक गिरावट की प्रवृत्ति देखी गई।

निष्कर्ष

इस पत्र में, हम शोध प्रयास के इस अध्याय में परीक्षणधीन परिकल्पना का सांख्यिकीय परीक्षण करते हैं तथा शीर्ष पांच देशों द्वारा शीर्ष पांच उद्योगों के लिए, विभिन्न मार्गों के माध्यम से, चुने गए समय के दौरान भारत में कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह के प्रवृत्ति का आकलन करते हैं। इस अध्ययन के समंक से स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में वृद्धि काफी बढ़ गई थी। हालांकि, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में वृद्धि की प्रवृत्ति का विश्लेषण करने के लिए, तीन वार्षिक चलती औसत की गणना की गई और तदनुसार अध्ययन अवधि के दौरान प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह की वृद्धि में बढ़ती प्रवृत्ति देखी गई। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि अध्ययन अवधि के दौरान प्रवृत्ति अनुपात अस्थिर प्रकृति का था। वर्ष 2018-19 में यह -53% था, वर्ष 2019-20 में यह 20% था, वर्ष 2020-21 में यह 10% था, वर्ष 2021-22 में यह 2% था। इस समंक से यह स्पष्ट है कि प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्रवाह में वृद्धि का अनुपात घट रहा था।

संदर्भ

1. डेनिसा. विंटिला, (2019), "फरैन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट थेओरीज: एन ओवरव्यू ऑफ द मैन एफडीआई थेओरीज" विंटिला डेनिसिया एकेडमी ऑफ इकोनॉमिक स्टडीज, बुखारेस्ट, वॉल्यूम 2. इसुज 2. दिसंबर 2010विदेश[https:// papers.ssrn. com/sol3/papers.cfm?abstract_id=180454](https://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=180454)
2. धिव्या (2020), "फैक्टर इन्फ्लुएंस कंजूमर बाइंग बेहेवियर ऑफ लक्ज़री ब्रांडेड गुड्स" यूनिवर्सिटी सेन्स, मलेशिया ।
3. चतुर्वेदी (2020), "रोल ऑफ एफडीआई इन इकोनॉमिक डेवलपमेंट ऑफ इण्डिया सेक्टरल एनालिसिस", इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन टेक्नोलॉजी बिजनेस ।
4. गायकवाड़, पी. (2021) "एफडीआई एंड इंडियन इकनोमिक। स्टडीज इन इण्डिया प्लेस नेम्स, 40(38), 278-283 ।
5. साहू, ए.पी. (2021) "इम्पैक्ट ऑफ जीडीपी एंड फील ऑन स्टॉक मार्किट" ए स्टडी इन बीएसइ एंड इन इण्डिया । कॉमफिन रिसर्च, 9(1), 47-51 ।
6. कुमार नीलांजना, (2021), "ए स्टडी ऑफ एफडीआई", फैकल्टी ऑफ कॉमर्स, बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी वाराणसी यूपी, इण्डिया -221005। वॉल्यूम 4, नम्बर 3, 2013 nilanjanakumari.jobs@gmail.com यूजीसी नेट जेआरएफ द्वारा, संदर्भ संख्या । [एफ.15-9(जून 2010)/2010 (नेट) यूजीसी-संदर्भ । क्रमांक:710/(नेट-जून 2010)] ।
7. कुमार देवेश, (2022), "एफडीआई इन इण्डिया", ssrnhttps://papers.ssrn.com/sol3/papers.cfm?abstract_id=4000000
8. वी. एंड एम. (2022) "एफडीआई एंड इण्डिया इकनोमिक।" स्टडीज इन इण्डिया प्लेस नाम । , 40(38), 278-283 ।
9. उषा श्रीवास्तव (2023) "ट्रेंड्स ऑफ एफडीआई इनफ्लो इन इण्डिया एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन " आईएसएसएन: 2277-7881; इम्पैक्ट फैक्टर : 8.017 (2023); आईसी मूल्य: 5.16; आईएसआई मूल्य: 2.286 पीर रिविबुड एंड रेफरीड जर्नल: वॉल्यूम: 12, अंक: 12 (3), दिसंबर: 2023 .DOI: <http://ijmer.in.doi/2023/12.12.56> www.ijmer.in.
10. श्वेता सिंह एट अल. (2024) "एन एनालिसिस ऑफ ट्रेंड, पैटर्न एंड स्ट्रैग ऑफ फॉरगेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट (एफडीआई) एंड फॉरगेन इंस्टीटूशनल इन्वेस्टमेंट (फील) टू इण्डिया ।" वॉल्यूम 30 नम्बर 4 (2024) DOI: <https://doi.org/10.53555/kuey.v30i4.2083>.
11. टोपियास लीनो एट अल. (2025) "फॉरगेन डायरेक्ट इन्वेस्टमेंट इंक्रीसेड टू ए \$41 ट्रिलियन" <https://www.imf.org/en/Blogs/Articles/2025/02/20/foreign-direct-investment-increased-to-a-record-41-trillion>.